

२८॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

यज्ञमेवप्रशंसंतिसंन्यासमपरेजनाः॥ दानमेकेप्रशंसंतिकेचिच्चैवप्रतिग्रहं॥ ८॥ केचित्सर्वपरित्यज्यतूष्णींध्यायंतआसते॥ राज्यमेकेप्रशंसंतिप्रजानांपरिपालनं॥ ९॥ हत्वाछित्वाचभित्वाचकेचिदेकांतशीलिनः॥ एतत्सर्वसमालोक्यबुधानामेषनिश्चयः॥ १०॥ अद्रोहेणैवभूतानांयोधर्मःससतांमतः॥ अद्रोहःसत्यवचनंसंविभागोदयादमः॥ ११॥ प्रजनंस्वेषुदारेषुमादवंहीरचापलं॥ एवंधर्मप्रधानेष्टमनुःस्वायंभुवोब्रवीत्॥ १२॥ तस्मादेतत्त्रयत्वेनकैतियप्रतिपालय॥ योहिराज्येस्थितःशश्वद्वशीतुत्यप्रियाप्रियः॥ १३॥ क्षत्रियोयज्ञशिष्टाशीराजाशास्त्रार्थतत्त्ववित्॥ असाधुनिग्रहरतःसाधूनांप्रग्रहेरतः॥ १४॥ धर्मवर्त्मनिसंस्थाप्यप्रजावर्तेतधर्मतः॥ पुत्रसंक्रामितश्रीश्रवनेवन्येनवर्तयन्॥ १५॥ विधिनाश्रावणेनैवकुर्यात्कर्मण्यतंद्रितः॥ यएवंवर्तेतराजन्सराजाधर्मनिश्चितः॥ १६॥ तस्यायंचपरश्रैवलोकःस्यात्सफलोदयः॥ निर्वाणंहिसुदुष्प्राप्यंबहुविघ्नंचमेमतं॥ १७॥ एवंधर्ममनुक्रांताःसत्यदानतपःपराः॥ आनृशंस्यगुणैर्युक्ताःकामक्रोधविवर्जिताः॥ १८॥ प्रजानांपालनेयुक्ताधर्ममुत्तममास्थिताः॥ गोब्राह्मणार्थयुध्यंतःप्राप्तागतिमनुत्तमां॥ १९॥ एंवैरुद्राःसवसवस्तथादित्याःपरंतप॥ साध्याराजर्षिसंघाश्चधर्ममेतंसमाश्रिताः॥ अप्रमत्तास्ततःस्वर्गप्राप्ताःपुण्यैःस्वकर्मभिः॥ २०॥ इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिराजध० देवस्थानवाक्येएकविंशतितमोऽध्यायः॥ २१॥ ॥३॥ वैशंपायनउवाच अस्मिन्नेवांतरेवाक्यंपुनरेवार्जुनोब्रवीत्॥ निर्विण्णमनसंज्येष्ठमिदंभ्रातरमच्युतं॥ १॥ क्षत्रधर्ममनुस्मर॥ ३॥ ब्राह्मणानांतपस्यागःप्रेत्यधर्मविधिःस्मृतः॥ क्षत्रियाणांचमहाराजसंग्रामेनिधनंमतं॥ विशिष्टंबहुभिर्यज्ञैःक्षत्रधर्ममनुस्मर॥ ३॥ ब्राह्मणानांतपस्यागःप्रेत्यधर्मविधिःस्मृतः॥ क्षत्रियाणांचनिधनंसंग्रामेविहितंप्रभो॥ ४॥ क्षात्रधर्मोमहारौद्रःशस्त्रनित्यइतिस्मृतः॥ वधश्चभरतश्रेष्ठकालेशखेणसंयुगे॥ ५॥ ब्राह्मणस्यापिचेद्राजनूक्षत्रधर्मैणवर्ततः॥ प्रशस्तंजीवितंलोकैक्षत्रंहिब्रह्मसंभवं॥ ६॥ नत्यागोनपुनर्यज्ञोनतपोमनुजेश्वर॥ क्षत्रियस्यविधीयंतनपरस्वोपजीवनं॥ ७॥

अपहृतेसंग्रहे॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥